व्याख्यान – 16

बी॰ ए॰ I

NRB

रश्मिरथी

टिप्पणियाँ

चतुर्थ सर्ग

अनल्प = अल्प नहीं, अधिक।

जो नर आत्मदान से ..... मरता है = आत्मत्याग अपने को ही पूर्ण करता है।

जहाँ कहीं है ..... मोल चुकानेवाला = संसार में जहाँ से प्रकाश आ रहा है, वहाँ कोई ऐसा व्यक्ति खड़ा है, जिसने आत्मत्याग किया है, जिसने अपने व्रत की अन्तिम कीमत चुकायी है; उदाहरण के रूप में आगे आत्मत्यागियों का उल्लेख है:

1. दधीचि – देवताओं ने एक असुर को मारने के लिए दधीचि से उनके मेरुदण्ड की हड्डी माँगी और उन्होंने खुशी-खुशी दे दी।

2. शिवि – राजा शिवि ने एक कबूतर को बचाने के लिए अपना मांस एक बाज को अर्पित कर दिया था।

3. सरमद – औरंगजेब के समय में हुए हैं। वे सूफी या रहस्यवादी सन्त थे। औरंगजेब ने उनकी खाल खिंचवा ली, क्योंकि वे प्रचलित विश्वास स्वीकार करने को तैयार नहीं थे।

4. सुकरात – यूनान का दार्शनिक, जिसे सिद्धान्त की रक्षा के लिए जहर का प्याला पीकर मरना पड़ा।

5. मनसूर – मनसूर ईरान के सूफी सन्त थे। वे 'अनलहक' – 'मैं सत्य ब्रह्म हूँ' पुकारने के कारण मारे गये। किन्तु उनके मृत शरीर से भी 'अनलहक' की पुकार आती रही। अत्याचारियों ने

Scanned with CamScanner

उनके शरीर की बोटी-बोटी कटवा दी; फिर भी प्रत्येक बोटी से यही आवाज निकलती रही।

किया नियति .... छिपकर पुण्य-विवर से = भाग्य ने पुण्य के छिद्र से होकर कर्ण पर वार किया। कवच-कुण्डल कर्ण को इसलिए देना पड़ा कि वह व्रत लिये हुए था कि पूजा के समय जो भी व्यक्ति जो कुछ माँगेगा, उसे वह वस्तु अवश्य दूँगा। निकष = कसौटी।
आकटक = कमर तक। वीरुध = काट देने पर भी पुनः हरे-भरे हो जाने वाले पौधे। बहुत डालोंवाली लता।
हरि के मायाचर = विष्णु के भेजे हुए मायावी गुप्तचर। साकल्य = सकल, सब कुछ।
केवल गन्ध जिन्हें प्रिय = देवता केवल सूँघते हैं, जिह्वा से स्वाद नहीं ले सकते।
शरभ = सिंह से भी बलवान 'अष्टपाद' नामक एक कल्पित पशु। तनुत्र = कवच।
परिभव = अपमान। भृगुपति = परशुराम।
अप्रतिम = अद्वितीय।
सम्बल = साधन। निःश्रेणी = सीढ़ी।
मन्द्र = मनुष्य की पूर्ण कण्ठ ध्वनि।
गम्भीर = गहरा। शील-सिन्धु = चरित्र-रूपी समुद्र।
तिग्म = प्रखर।
ले अमोघ यह अस्त्र = एकघ्नी।

निशा कुमारी
04-05-2020